

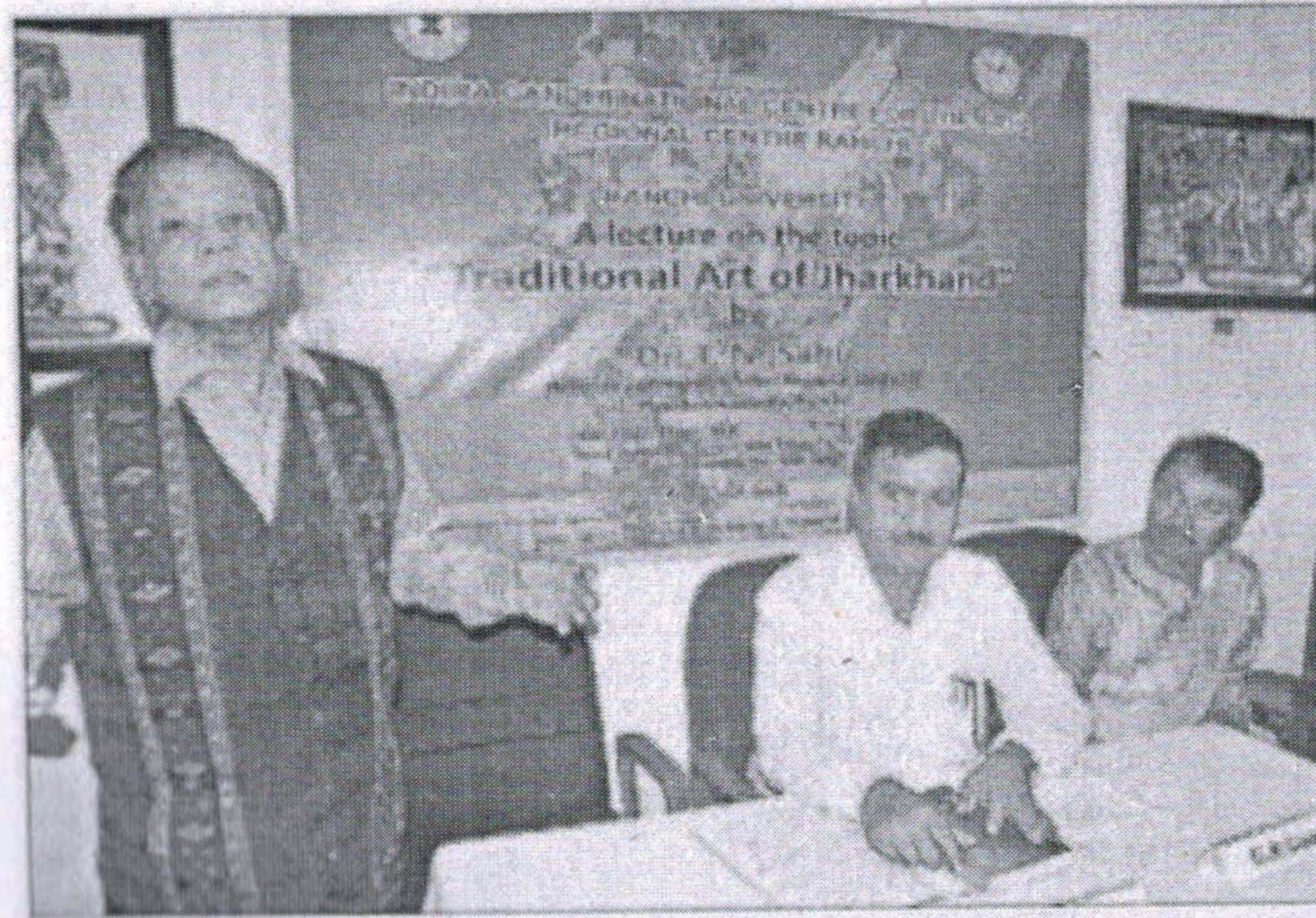
झारखंड की पारंपरिक कला पर व्याख्यान, डॉ टीएन साहू ने कहा

कला है समुदाय की पहचान

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची क्षेत्रीय शाखा और रांची विवि के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को झारखंड की पारंपरिक कला पर व्याख्यान हुआ. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के मोरहाबादी स्थित कार्यालय में डॉ बच्चन कुमार ने कहा कि झारखंड की पारंपरिक कला का जड़ आदिवासी समुदाय है.

जनजातीय समुदाय की पीढ़ियों ने राज्य की संस्कृति को आकार दिया है. झारखंड की संस्कृति पर 30 आदिवासी समुदाय मुंडा, उरांव, असुर, संताल, बिरहोर आदि का प्रभाव है. जनजातीय और क्षेत्रीय भाषा विभाग के डॉ टीएन साहू ने कला की परिभाषा और उसके विभिन्न पहलुओं को बताया. किसी भी समुदाय की पहचान उसकी कला से भी होती है.



इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के मोरहाबादी स्थित कार्यालय में विमर्श करते अतिथि.



कला से किसी समुदाय विशेष के अध्ययन में भी सहायता मिलती है. उन्होंने झारखंड की मिट्टी कला और पारंपरिक वेशभूषा के बारे में विस्तार से

जानकारी दी. बांस बनने वाली चीजों के बारे में भी बताया. डॉ गिरिधारी राम गोंझू ने कहा कि झारखंड की पुरानी वस्तुओं और कला से जुड़ी सामग्रियों

का डॉक्यूमेंटेशन होना चाहिए, इन्हें संरक्षित करना बहुत जरूरी है क्योंकि ये कला लुप्त होती जा रही है. पुराने समय में महिलाएं जो आभूषण धारण

करती थी उनका अपना महत्व है. ये आभूषण नुकीले भी होते थे ताकि जरूरत पड़ने पर महिलाएं उसे हथियार के रूप में इस्तेमाल कर सकें.

Sinha discusses Oral Tradition, historiography

PNS ■ RANCHI

There have been differences in the nature and quality as well as quantity of historical writings in different ages and among different peoples of the world. These differences have been often ascribed to the 'Historical consciousness' of a particular society said Dr. Rajiva Kumar Sinha, a professor in the Department of Ancient Indian History, Culture and Archaeology at TM Bhagalpur University during a programme organised on Monday by Indira Gandhi National Centre for the Arts, Regional Centre, Ranchi.

"The crux of the problem of Indian historiography thus lies in the absence of an organised system of recording. The same is true with the historiography of Jharkhand where majority of the population is still illiterate and where tribes still inhabit many parts. Absence of written records is

"The crux of the problem of Indian historiography thus lies in the absence of an organised system of recording. The same is true with the historiography of Jharkhand where majority of the population is still illiterate and where tribes still inhabit many parts. Absence of written records is thus quite natural. But as we all know 'being unwritten does not mean being unknown'"

thus quite natural. But as we all know 'being unwritten does not mean being unknown,' added Sinha.

लोककथा और कला का अध्ययन जरूरी

■ झारखंड की मौखिक परंपरा और इतिहास लेखन: संथाल परगना क्षेत्र की लोककथाओं व लोककलाओं का मॉडल अध्ययन

लाइफ रिपोर्टर रांची

life.ranchi@prabhatkhabar.in

टीएम भागलपुर विवि के एआइएचसी आर्कियोलॉजी विभाग के प्राध्यापक प्रो राजीव कुमार सिन्हा ने कहा कि विभिन्न युगों व लोगों के बीच ऐतिहासिक लेखन की प्रकृति, गुणवत्ता और परिणाम में भिन्नता रही है। इसका श्रेय अक्सर उस विशेष समाज की 'ऐतिहासिक चेतना' को दिया जाता है।

भारतीय संदर्भ में इतिहासकार यह मानते हैं कि यहां के इतिहास लेखन में ज्यादातर पश्चिम के प्रारूप व आदर्श का



अनुसरण किया गया है अथवा प्राचीन ग्रीस या चीन का मॉडल उधार लिया गया है। उन्होंने कहा कि भारतीयों ने स्वयं अपने शुरुआती साहित्य को श्रुति और स्मृति के रूप में वर्गीकृत किया है। इसलिए भारत पर लिखनेवाले इतिहासकारों के समक्ष पिछली घटनाओं के वास्तविक पुनर्निर्माण की समस्या है। अर्थात् भारतीय इतिहास लेखन की समस्या की जड़ अभिलेखन

(रिकॉर्डिंग) की एक सुव्यवस्थित प्रणाली की गैर मौजूदगी में निहित है। यह झारखंड की इतिहास के साथ भी है, जहां की अधिसंख्य जनसंख्या अभी भी अशिक्षित है और जहां विभिन्न हिस्सों में आदिवासी निवास करते हैं। इस संदर्भ में लिखित अभिलेखों की कमी स्वाभाविक है, पर 'अलिखित होने का अर्थ अज्ञात नहीं है'। इसलिए इस बात की आवश्यकता है कि



कार्यक्रम में इतिहास लेखन पर हुआ विमर्श

प्राचीन साहित्यिक कार्यों, पुरातात्विक व पुरालेख सबूत, मध्यकालीन ऐतिहासिक कार्य और ब्रिटिश रिकॉर्ड व दस्तावेजों पर आधारित 'वाह्य इतिहास' के अतिरिक्त हमें लोककथा व लोक कला पर भी काम करना होगा। ऐतिहासिक चेतना दृढ़ होना होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता रांची विवि में इतिहास विभाग के एचओडी डॉ अजय कुमार चट्टोराज ने की। इस

मौके पर कल्चर आर्कियोलॉजी विभाग के डिप्टी डायरेक्टर डॉ एचबी सिन्हा, इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट्स, रीजनल सेंटर रांची के निदेशक डॉ बच्चन कुमार, डॉ गिरिधारी राम चौधरी, डॉ सुधा कुमारी, डॉ अजय कुमार, डॉ विनोद कुमार डॉ ऋतु कुमारी, प्रमोद कुमारी, राकेश पांडेय विद्यापीठ मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन प्रो कमल कुमार बोस ने किया।

? Quiz

पृष्ठ ११

पुस्तक
संख्या
मिति

01010101

आपका नाम है क्या ?

800-955-5889 • 910-294-1111

[illegible]

क्या आप जानते हैं

कमाली अर्थात् केमली नाम की आजा
अर्थात् है। अर्थात् में तीन प्रकार आजा
है। अर्थात् के तीन आजा के नाम आजा
अर्थात् आजा आजा है। आजा आजा
अर्थात् आजा आजा है।

विद्यार्थियों ने सीखा
नागपुरी नृत्य कौशल

आइं हाउस में नागपुरी नृत्य पर **कार्यशाला** एवं नृत्य का प्रदर्शन

[illegible]

... ..



and the other is the *Journal of the American Medical Association*.

100 एपिसोड की सीरीज
बनाएंगे राम माधवानी

कि फिलिम और टेलिविजन जैसे मीडियाएन अलार्मिंग में बदलने ली गयीं, देखी फिलिमएन और
 कालकला की लक्ष्मी फिलिमएनही ले ली है। यह भी सिर्फ़ उनमें सिंगल फिलिमों की
 नहीं, बल्कि सीरीज तक बढ़ने में थी। काशी एन एन के सिंगल फिलिमएन "द
 ग्रीनलीव" जहाँ यह है एक बिल्कुल सीरीज तक ली है। अन्य एक आपसकी
 की इस चीज़ में शामिल हो चुकी है। फिलिम और सीरीज प्रमुख लोगों के
 साथ में "अपनी धर्म" एक है एक बिल्कुल सीरीज बढ़ने की लक्ष्मी में है। यह
 मुलत: बंगाली सीरीजएन टेलिविजन पर ही "बिल्कुल सीरीज" का देखी जाने
 लगे। इसकी टेलिविजन फिलिम मुलतएन जाने हुई थी। उनकी कटिनीयों में
 इसमें टेलिविजन आपसकी बढ़ने की है। यह यह है कि यह सीरीज 100 फिलिमों
 का एक और फिलिम सीरीजों में इसकी लक्ष्मी मुलत हो जायेगी। इन दिनों मुलत
 के लक्ष्मी कालकला की कटिनीय लगे ली है। सीरीज लक्ष्मी में बंगाली
 सिंगल और कालकला की सीरीज लगे। लक्ष्मी की कटिनीय का जाने कि
 सिंगल "बिल्कुल सीरीज" के लक्ष्मी टेलिविजन की लक्ष्मी सिंगल लक्ष्मी।
 प्रमुख लोगों इसकी लक्ष्मी लक्ष्मी में लगे हैं। -भीरु मुलत

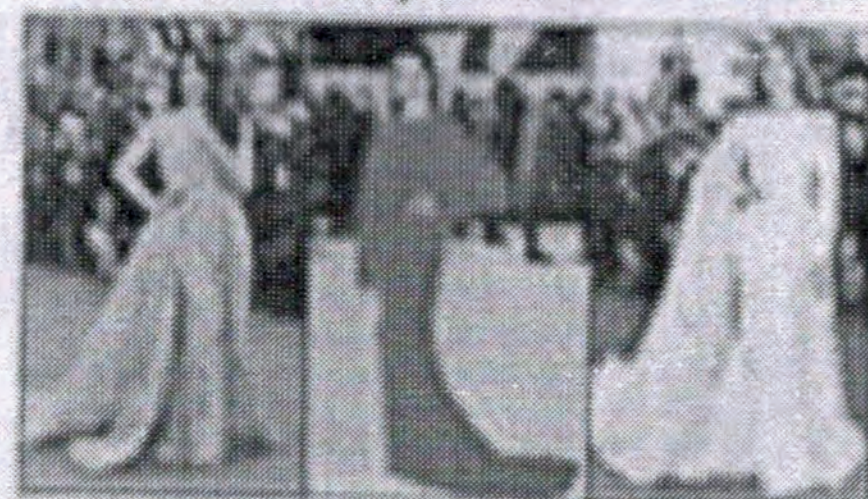


वाराणसी के आरंभ निर्देशित करेंगे 'मलंग'

अभिषेक शर्मा, अजय शर्मा और अश्विनी शर्मा
 हैं। 'गुड' और 'गुडिंग' के पूरे काम भुके हैं। शर्मा
 जी के अलावे 'अश्विनी' और 'अश्विनी' भी



फिल्में नहीं, चमके सितारे



आज मैं सबसे अधिक मिलने वाली हूँ। यहाँ की शिलायें इतनी ही लीजियुं
के गुणवत्ता में लगी हैं। जब से 'शिला' और 'आयुर्वेद' का सम्बन्ध
होना उस सम्बन्ध में कि सबसे मिलने 1000 आयुर्वेद के अधिकतम
संशोधन करने हैं। (शिलायें से) आयुर्वेद की सबसे अधिकतम
किन्तु आयुर्वेद और आयुर्वेद। यह सबसे या सबसे अधिक गुणवत्ता के साथ
आयुर्वेद और आयुर्वेद। (शिलायें) आयुर्वेद की सबसे अधिकतम
करते हैं। इन सबके साथ ही जब इनके साथ किन्तु आयुर्वेद और सबसे या
आयुर्वेद मिलने की दिशा में, तो आयुर्वेद से है। यह सबसे अधिकतम
या आयुर्वेद है।

उत्तर ही में उत्तराखण्ड विधानसभा के भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने कहा है कि उत्तराखण्ड के विकास के लिए राज्य सरकार को एक ही दिशा में चलना चाहिए। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड के विकास के लिए राज्य सरकार को एक ही दिशा में चलना चाहिए। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड के विकास के लिए राज्य सरकार को एक ही दिशा में चलना चाहिए।